हनुमान अष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अंधियारो,
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सुों जात न टारो,
देवन आनि करी विनति तब छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो,
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो।1।

बालि की त्रास कपीस बसैं गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो,
चौंकि महामुनि साप दियो तब चाहिय कौन विचार विचारो,
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो,
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो।2।

अंगद के संग लेने गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो,
जीवत ना बचिहों हमसो जु बिना सुधि लाए इहां पगु धारो,
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया सुधि प्राण उबारो,
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो।3।

रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो,
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो,
चाहत सिय असोक सों आगिसु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो,
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो।4।

बान लग्यो उर लक्षमन के तब प्राण तजे सुत रावन मारो,
लै गृह वैघ सुषेन समेत तबै गिरी द्रोन सुबीर उपारो,

आनि संजीवन हाथ दई तब लक्षमन के तुम प्रान उबारो,
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो।5।

रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो,
श्री रघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ,
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो,
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो।6।

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो,
देविहिं पूजि भली विधी सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र विचारो,
जाय सहाय भयो तबहिं अहिरावन सैन्य समेत संहारो,
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो।7।

काज किए बड़ देवन के तुम वीर महाप्रभु देखि विचारो,
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो
वेगी हरो हनुमान महाप्रभु जो कुछ संकट होय हमारो,
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो।8।

<u>दोहा</u>

लाल देह लाली लसे अरु धरि लाल लंगूर,
वज देह दानव दलन जय जय जय कपि सूर ।।